स्थापित : 23.1.2000

व्यवस्था परिवर्तन

राष्ट्रीय कार्यालय : 601, रोहित हाउस टालस्टाय,
नई दिल्ली–110001, फोन : 011–23311641
Email : changeofsystem8@gmail.com, Website : www.vyavasthaparivartan.org (In Hindi)

संरक्षक :
डॉ शिवराम सिंह गौर
07838273651
09453286099

संस्थापक अध्यक्ष :
संसार चन्द्र
08800598564
08800901448

उपाध्यक्ष :
केसरी सिंह गुज्जर
09310173131

मुख्य महासचिव :
मृत्युंजय शर्मा
09310472820

महासचिव :
डॉ ओमकार नाथ कटियार
09540288242

महासचिव :
राजेन्द्र कुमार शास्त्री
09899446209

महासचिव :
संध्या सिन्हा
08102919855

अनुज कौशिक
मुख्य प्रचारक
नौएडा यू0पी0
09717980302

1. न तु कामये राज्यं, न मोक्षम्, न पुनर्भवम्।
कामये, दुःखतप्तानाम्, प्रणिनामार्तनाशपम्।।
(न मुझे राज्य की कामना है, न ही मोक्ष की कामना है और न ही पुर्नजन्म की कामना है। मैं तो दुःख से पीड़ित प्राणियों के दुःखनाश की कामना हूं।

2. चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः।
(श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा कि गुण और कर्मों के अनुसार मैंने चार वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) की सृष्टि की है)

3. जन्मना जायते शूद्रः संस्कारात् द्विज उच्यते।
(मनुष्य जन्म से शूद्र हो सकता है परन्तु कर्म से ब्राह्मण भी बन सकता है)

4. हितोपदेश में वर्णित है :–
जन्मना मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु लोष्ठवत्।
आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति सः पण्डितः।।
(जो दूसरे की स्त्री को माता के समान व दूसरे के धन को मिट्टी के ढेले के समान तथा समस्त प्राणियों को अपने समान समझता है, वही ज्ञानी है, वही पण्डित है तथा वही ब्राह्मण है)

5. महाकवि कालिदास ने रघुवंश महाकाव्य में कहा है –
क्षतात् त्रायते इति क्षतियः।
(क्षत्रिय वही है जो सबकी रक्षा करता है अर्थात् कोई भी जाति हो, कोई भी धर्म हो, कोई भी प्राणी हो, सबकी रक्षा करने वाला क्षत्रिय है (महाराज दिलीप ने गौ की रक्षा के लिए अपने शरीर को न्यौछावर करने का प्रस्ताव किया था)

6. अष्टादशपुराणेषु व्यासस्य वचनं द्वयम्।
परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्।।
(अठारह पुराणों में महर्षि व्यास जी के महत्वपूर्ण दो वाक्य हैं – परोपकार करने से पुण्य मिलता है तथा दूसरों को पीड़ा पहुंचाना पाप होता है)